सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी

11

सोनदीप*

इक्कीसवीं सदी सूचना एवं संचार की सदी है। यह सदी आधुनिक विचारों की सदी है। लोकतंत्रात्मक प्रणाली वाले भारत देश में लोकतंत्र के मुख्य चार स्तंभों में शामिल पत्रकारिता एवं समर्थ तथा सशक्त माध्यम के रूप में हमारे सामने है। इस सदी में संचार के विभिन्न माध्यमों ने सूचनाओं का एक ऐसा भंडार मनुष्य जाति के समक्ष खोल कर रख दिया है, जिससे वह अपनी मनचाही जानकारियां प्राप्त करने में समर्थ है। सन् 90 के दशक में इंटरनेट का भारत में आमगन ठीक वैसे ही चौंकने वाली घटना थी, जेसे 1959 में टी.वी. के आगमन की घटना। क्योंकि जिस समय टी.वी. स्क्रीन पर चलते–फिरते लोगों को देखकर लोगों ने दांतों तले अंगुली दबा ली थी, ठीक उसी प्रकार जब माउस पर एक क्लिक मात्र से उनका संदेष सुदूर देश–विदेश तक मिनटों–सैकेंडों में पहुँचा तो यह घटना भी कम रोमांचक तथा आश्चर्यजनक नहीं थी। इंटरनेट की संचार के एक माध्यम के रूप में सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इसने बहुत कम समय में अपनी पहुँच एक बड़े तबके तक बना ली।

इस संदर्भ में डॉ. गिरीश्वर मिश्र लिखते हैं– "इंटरनेट ने लोगों को वह सामर्थ्य दी है कि वे खुद इस दुनिया में अपने लिए बोलें। वस्तुतः इंटरनेट ने सूचना और विषयवस्तु के साथ एक सर्जनात्मक संबंध की दिशा दिखाई है। इसके पूर्ववर्ती जनसंचार माध्यम केवल विषयवस्तु या सूचना देते थे, निष्क्रिया और संवादहीन। इंटरनेट व्यक्ति की उसकी सीधी भागीदारी का सशक्त माध्यम उपलब्ध कराता है।"[1]

भारत जैसे प्रगतिशील देश में इंटरनेट की विकास दर का इतना ऊँचा होना विकसित देशों के लिए एक बड़ी ख़बर थी। फिर भारत ने तो जैसे इस दिशा में लौट कर देखा ही नहीं, अपितु आज कंप्यूटर के क्षेत्र में भारत विश्व के अग्रणी देशों में शुमार है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों के आगमन के पश्चात् से ही हिन्दी पत्रकारिता के भविष्य पर विचार–विमर्श किया जाने लगा। यह चिंता इस कारण की स्वाभाविक थी कि इंटरनेट की दुनिया पूरी तरह अंग्रेजी पर निर्भर थी

*(शेधार्थी, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़), पी.एच.डी. हिन्दी शोध केन्द्र, एस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना

और इसकी पहुँच किसी एक प्रदेश या देश तक ही नहीं थी बल्कि समूचे विश्व को इसने अपनी चपेट में ले लिया था। कहीं न कहीं भारतीय पत्रकारिता एक ऐसा क्षेत्र रहा है जिसके द्वारा हिन्दी भाषा ने आम जनता तक अपनी पहुँच को व्यापक स्तर तक बनाए रखा। लेकिन यह नई सूचना प्रौद्योगिकी एकाएक ही हिन्दी के लिए चुनौती बनकर उभरी थी। एक ओर तो इस प्रौद्योगिकी के कारण हिन्दी की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्रश्नचिह्न लगने लगा वहीं दूसरी ओर हिन्दी भाषा की व्याकरणिक संरचना भी बिखरने लगी। इंटरनेट और मोबाईल क्रान्ति ने तीसरी दुनिया के देशों को अपनी भाषा के अस्तित्व के संकट से जूझने को बाध्य किया। लेकिन भारतीय संदर्भ में, वह भी हिन्दी पत्रकारिता के संदर्भ में– यह क्रान्ति उसके लिए वैश्विक स्तर पर सकारात्मक पृष्ठभूमि तैयार करने में सहयोगी रही। हिन्दी पत्रकारिता को अपना मिशन स्वीकार करने वाले पत्रकारों और हिन्दी भाषा को अपनी स्मिता का आधार मानने वाले हिन्दी प्रेमियों ने इस नई प्रौद्योगिकी को अपने ऊपर हावी होने देने की बजाए इसे अपनी शक्ति बनाकर विश्व के समक्ष हिन्दी भाषियों को एक नया आयाम प्रदान किया।

"वेब पत्रकारिता के विकास ने पत्रकारिता की पारंपरिक परिभाषा ही बदल दी है। वेब या इंटरनेट पत्रकारिता, भारत की नहीं समूचे विश्व के लिए एक नई चीज है। वेब–पत्रकारिता आज मीडिया का सबसे तेजी से विकसित होने वाला पक्ष बन गया है। अंग्रेजी और हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के अधिकतर बड़े अख़बार आज 'ऑनलाइन' हो चुके हैं।"[2]

सूचना प्रौद्योगिी और मीडिया के कॉकटेल के रूप में पिछले दिनों पत्रकारिता का एक नया आयाम, नया माध्यम, वेब पत्रकारिता के रूप में अवतरित हुआ। इसमें इंटरनेट पर 'समाचार पत्र' का प्रकाशन किया जाता है।

"कोई भी व्यक्ति अपनी भावनाओं और विचारों को सर्वश्रेष्ठ रूप में अपनी मातृभाषा में जितनी सहजता से अभिव्यक्ति कर सकता है, इतना किसी अन्य भाषा में नहीं। इसीलिए नई सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ ही हिन्दी भाषियों के लिए इस दुनिया में अपने लिए जगह बनाना इतना आसान नहीं था। लेकिन भारतथ बाजार में हिन्दी भाषियों की दुनिया से अंग्रेजी को हटाकर अपना आधिपत्य जमाने के लिए ही इंदौर के विनय छजलानी ने सबसे पहले वर्ष 1999 में हिन्दी पोर्टल 'वेबदुनिया' की शुरूआत की। भले ही आरम्भिक दौर में इस पोर्टल में हिन्दी भाषी उपभोक्ताओं के लिए अधिक सामग्री नहीं थी लेकिन यह हिन्दी भाषियों के साथ–साथ भारतीय परिवेश और साहित्य को जानने वालां के लिए भी अपने–आप में एक दुर्लभ पोर्टल बना। इस पोर्टल में जहां हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण

सामग्री का प्रकाशन किया जाने लगा वहीं भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, खेल, राजनीति, ज्योतिष, विज्ञान आदि अनेक विषयों पर सामग्री प्रसारित की जाने लगी। इस पोर्टल के माध्यम से ही हिन्दी भाषा भारत से बाहर विश्व में भी प्रतिष्ठा का केन्द्र बनी।"[3]

वेबदुनिया डॉट कॉम की हिन्दी भाषा के माध्यम से हिन्दी के प्रचार–प्रसार की इस मुहिम ने जल्दी ही इसे एक क्रान्ति के रूप में परविर्तित कर दिया और इंटरनेट पर सैंकड़ों की संख्या में हिन्दी पोर्टलों और ब्लॉगर्स ने अपना अधिकार जमा लिया। यह हिन्दी भाषा के वैश्विक स्तर पर बढ़ते पाठकों की माँग ही थी कि नई सूचना प्रौद्योगिकी के विकास में कार्य करने वाले विशेषज्ञ इंजीनियरों ने इंटरनेट पर हिन्दी में लेखन के लिए अनेक फांट उपलब्ध करा दिए।

इंटरनेट साठ के दषक में उन दूरदर्शी लोगों की कल्पना का परिणाम है जिन्होंने सूचनाओं के परस्पर आदान–प्रदान के रूप में कंप्यूटर की अदभुत क्षमता का पूर्वानुमान लगा लिया था। प्रारंभ में इंटरनेट का प्रयोग वैज्ञानिक शोधों और क्षेत्रों में किया गया। सर्वप्रथम एम.आई.टी. संयुक्त राज्य अमेरिका संस्थन के जे.सी.आर. लिकलाइडर ने 1962 में कंप्यूटर के वैश्विक नेटवर्क का प्रस्ताव रखा।

किसी ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि इंटरनेट की वह दुनिया, जिस पर कभी अंग्रेजी का एकाधिकार था, एकाएक वह हिन्दी और अन्य भाषाओं के लेखकों और पाठकों के लिए अपने द्वार खोल देगी।

"पत्रकारिता के एक माध्यम के रूप में इंटरनेट की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह अन्य सभी संसार माध्यमों की तरह एकतरफ़ा नहीं है। इंटरनेट केवल सूचनायें देने भर तक सीमित नहीं है अपितु पाठक तथा दर्शक अपनी तत्काल प्रतिक्रिया की इस माध्यम के जरिये दे सकता है। इंटरनेट की इस ख़ूबी का फायदा उठाने के लिए समाचार पत्र तथा टी.वी. न्यूज चैनलों ने भी पाठकों से संपर्क के लिए ई–मेल के प्रयोग को प्रोत्साहन देना षुरू किया है। इस तरह समाचारों के बारे में पाठकों की टिप्पणियां उन्हें जल्दी मिलने लगी हैं। ज्वलंत मुद्दों पर पाठकों की राय का सर्वेक्षण करने के लिए भी समाचारपत्रों ने इंटरनेट जनमत सर्वेक्षण को अपनाया है। इंटरनेट पर सुलभ समाचार वेबसाइटों पर कुछ ज्वलंत तथा समसामयिक विषयों पर पाठकों के विचारों के परस्पर आदान–प्रदान के मंच भी चलाये जाते हैं। इस प्रकार किसी भी समाचार विशेष के प्रत्येक पहलु से जुड़ी जानकारी पाठक को उपलब्ध होती है और उनमें सर्जनात्मक लेखन की प्रवृत्ति का भी जन्म होता है।"[4]

इंटरनेट एक अन्तर्राष्ट्रीय जनसंचार माध्यम है। इस माध्यम के जरियेआप विश्व के एक कोने से लेकर विश्व के दूसरे कोने तक की खबरें पा सकते हैं।

स्थानीय से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी महत्वपूर्ण जानकारियां आप इंटरनेट के माध्यम से पा सकते हैं। दूसरा इसका उपयोग करने वाला पाठक सिर्फ एक समाचार पत्र या समाचार स्त्रोत पर आश्रित रहने को मजबूर नहीं है। वह दुनिया भर के समाचार स्त्रोतों तक पहुंच सकता है तथा उनकी विविधता को अपने निष्कर्षों का आधार बना सकता है।

नई सूचना प्रौद्योगिकी के मोबाईल भी भाषाई क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण आधार रहा है। पूरी तरह से अंग्रेजी से संचालित किए जाने वाले मोबाईल बाज़ार में अंग्रेजी से पूरी तरह से उपरिचित और हिन्दी में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में रुचिकर लोगों के लिए ही मोबाईल कंपनियों ने हिन्दी फॉंट की सुविधा देनी आरंभ कर दी। मोबाईल के संदर्भ में खास बात यह है कि यह भी यूनीकोड पद्धति पर ही आधारित है। लेकिन इसमें टाइपिंग की प्रणाली, मोबाईल के मॉडल और उसमें विद्यमान तकनीक के आधार पर बदलती रहती है। इन तकनीकों के माध्यम से मोबाईल की सभी क्रियाएँ हिन्दी में संचालित की जा सकती हैं और अपने संदेशों को भी हिन्दी या अंग्रेजी अथव दोनों भाषाओं में भेजे जा सकते हैं। इस नए मोबाईल युग में भी उसी नाम की एक नई तकनीकी अवधारणा ने जब लगभग सभी मोबाईलों में हिन्दी फॉंट की सुविधा उपलब्ध करा दी है।

"इंटरनेट की बदौलत अमेरिका में रहते हुए भी आप असम ट्रिब्यून, स्टेट्समैन, हिन्दू तथा ट्रिब्यून (चण्डीगढ़) जैसे समाचार पत्र बिना नागा देखा सकते हैं जो भारत में रहते हुए भी हर जगह अपने मुद्रित रूप में सर्वसुलभ नहीं है।"[5]

"वैश्वीकरण के दौर में मीडिया ने दुनिया को सपेट कर रख दिया है। समाज का कोई भी पहलु मीडिया से छुपा नहीं रह सकता। आज मीडिढया की नज़रों से बच पाना असंभव–सा लगता है। मीडिया से समाज में जागरुकता आई है। राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा में भी मीडिया का बहुत अधिक योगदान रहा है। मीडिया वर्तमान जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह वर्तमान जीवन का आधार है। सभी वर्ग के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति में मीडिया के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। मीडिया का स्वरूप विविधात्मक है।"[6] कंप्यूटर और इंटरनेट मीडिया के रूप में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिससे षिक्षा, व्यापार सूचनाओं का आदान–प्रदान, चिकित्सा, सामाजिक संबंध स्थापित करने जैसे कई कार्यों को किया जा सकता है। "'मीडिया' आधुनिक दुनिया के परिप्रेक्ष्य में शक्ति का प्रतीक बन गया है।"[7]

जहाँ तक नई सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा हिन्दी भाषा के विकास का प्रश्न है तो निश्चित रूप में इस तकनीक ने हिन्दी को विकसित करने के साथ–साथ

इसके शब्द भंडार को भी विकसित करने में अच्छा योगदान दिया है। स्वतंत्र और प्रतिष्ठित लेखकों की सांझी विरासत के रूप में हिन्दी में लिखे गए विभिन्न विषयों के साहित्य को इंटरनेट की दुनिया ने जगह देकर विश्व को हिन्दी भाषा से पूर्णतः परिचित कराया है। अब हिन्दी भाशा इस प्रौद्योगिकी के सहारे रोजगारोन्मुख होकर विश्व समुदाय को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। हिन्दी भाषा को आधार बनाकर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिए तो यह प्रौद्योगिकी वरदान बन गई है। अब हिन्दी उत्तर–भारत या हिन्दी पट्टी के राज्यों तक ही सीमित न रहकर विश्व के मानचित्र पर अपना परचम लहरा रही है। जल्दी ही यदि हिन्दी को विश्व के प्रतिष्ठित संगठन 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में स्थान मिल जाए तो आश्चर्य नहीं होगा। भारत को फिर से विश्व गुरू के स्थान पर स्थापित करने में हिन्दी भाषा ने अपना कदम बढ़ा दिया है और जल्दी ही वह नई सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे भारत को विश्व में उसकी प्राचीन प्रष्ठिता फिर से दिला देगी।

शोध–सन्दर्भ

1. राष्ट्री सहारा, 14 जून, 2001, पृष्ठ 6

2. डा. निशांत सिंह, 'पत्रकारिता की विभिन्न विधाएं', भूमिका, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2002

3. सहदय, जनवरी–मार्च, 2013

4. आगमित (वार्षिकी) 2013, पृष्ठ 38

5. अशोक मलिक, 'सूचना प्रौद्योगिकी एवं पत्रकारिता', पृष्ठ 52, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2002

6. आगमित (वार्षिकी 2013, पृष्ठ 42

7. आगमित (वार्षिकी) 2013, पृष्ठ 42